विचार बिन्दु

जो पुरुषार्थ नहीं करते उन्हें धन, मित्र, ऐश्वर्य, सुख, स्वास्थ्य, शांति और संतोष प्राप्त नहीं होते। –वेदव्यास

जातीय संगठन–सार्थकता व सामर्थ्य

जाती भारतीय समाज की हकीकत है।अधिकांस भारतीय धर्म शास्त्रों में किसी न किसी प्रकार से जातियों का विवरण है।विभिन्न जातियों के बीच सामाजिक व्यवहार कैसा है,कैसा हो इसके भी उल्लेख मिल जाएंगे। बहुत सी जातियों के देवता धर्मस्थल भी अलग अलग मिल जाते है।भारत में जाति तो व्यक्ति के मरने के बाद भी उसका पीछा नहीं छोड़ती,श्मसान भी जातियों के अनुसार।

जाती व्यक्ति की एक बड़ी पहचान है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते,मनुष्यों के समूह के साथ अपनी पहचान बनाता है।उसकी सबसे पहली इडेन्टिटी उसके माता–पिता,बाद में परिवार,फिर गांव–शहर–देश–प्रदेश, से बनती है।धर्म,भाषा दूसरी बड़ी पहचान है।इनके अलावा एक जैसे प्रोफेसन्स–सेवा–,समाज चेतना–सेवा कार्यों वाले ग्रुप्स, राजनीतिक विचारधाराओं पर आधारित ग्रुप्स व अन्य ऐसी ही समूह भी इडेन्टिटी का बड़ा आधार है।

कुल मिलाकर, जाती भारतीय समाज में एक बड़ी इडेन्टिटी है जिसके आधार पर समाजों के लोग इक्कठे होकर अपने समाज से सम्बंधित विभिन्न बातों–समस्याओं–उप्लब्धदियों पर विचार करते हैं।

भारतीय समाज में रीतिरिवाज,परिपाटियां,घोर अशिक्षा,अंधविश्वास,कुरीतियां, जाती आधारित पूर्वाग्रहों–दुराग्रहों के फैलने–फैलाने के अनेक धार्मिक, इतिहास से जुड़े कारण रहे है।

इसी प्रकार बहुत से जातीय समूहों की सरकारों से कुछ अपेक्षाएं, मांगे होती है ।

यदि विभिन्न समाजों के लोग एकत्र होकर इन सब मुद्दों पर समय की मांग के अनुसार विचार कर,निर्णय करते है तो यह उन संगठनों की सार्थकता है और समाज के आ ान पर लोग विभिन्न प्रतिगामी रीतिरिवाजों,अन्धविश्वसों,जाती आधारित पूर्वाग्रहों–दुराग्रहों से दूर होते है तो यह उनके सामर्थ्य–प्रसांगिकता के प्रमाण होंगे।

उदाहरणार्थ समाज के लिए डाईन प्रथा,झाड़ भूंक से इलाज का अंधविश्वास–झोलाछाप डॉक्टरों से इलाज करवाना, तीव्र गति से फैलता तरह तरह के नशों का नाशूर,गैंगस्टरस को रोलमॉडल मान कर घृणित वारदातों की ओर आकर्षित होते युवा,दहेज प्रथा व उस से होने वाली मोतें या इस सम्बंध में लगने वाले झूठे आरोप,बाल विवाह कुप्रथा,मृत्युभोज के नाम पर दशो दिन बहुत बड़ी संख्या में लोगों को भोजन करवाना,शादी समरोह–जन्मोत्सव पर होने वाला अपव्यय, इस प्रकार के मसले हैं जिनमें सामूहिक सामाजिक निर्णय बहुत ही असरकारक हो सकते है बशर्ते इन संगठनों के कर्ताधर्ता स्वयं उदाहरण बनें।

दहेज कुप्रथा:– दहेज के सम्बंध में जयपुर के पारीक समाज का एक बड़ा रोचक किस्सा है।1699 में सांगानेर व आमेर के दो पारीक परिवारों हुई शादी में इतने धन का अपव्यय हुआ कि प्रबुद्ध नागरिकों नें यह निर्णय किया कि पारीक समाज में दहेज/पहरावणी में एक तय रकम से अधिक नहीं दिए जाएंगे।वर्तमानं में यह रकम 217 रु है। कुछ दूसरे समाज भी समय समय यह निर्णय करते है कि शादी में दहेज के नाम पर नारीयल व एक सौ रुपए दिए जाएं। विभिन्न समाज भी इसी प्रकार की कोई स्वस्थ परम्परा करें तो यह बहुत बड़ी बात होगी।यदि,जो समर्थ होता है वह दहेज का बड़ा दिखावा करता है तो उसके कम सामर्थ्यवान परिवार–कुन्बे वालों पर वैसा ही कुछ करने का मानसिक दबाव बनता है। ऐसा करने वालों की वितीय स्थिति खराब हो जाती है।

> **कुल मिलाकर, जाती भारतीय समाज में एक बड़ी इडेन्टिटी है जिसके आधार पर समाजों के लोग इक्कठे होकर अपने समाज से सम्बंधित विभिन्न बातों-समस्याओं-उप्लब्धदियों पर विचार करते हैं। भारतीय समाज में रीतिरिवाज,परिपाटियां,घोर अशिक्षा,अंधविश्वास,कुरीतियां, जाती आधारित पूर्वाग्रहों-दुराग्रहों के फैलने-फैलाने के अनेक धार्मिक, इतिहास से जुड़े कारण रहे है। इसी प्रकार बहुत से जातीय समूहों की सरकारों से कुछ अपेक्षाएं, मांगे होती है । यदि विभिन्न समाजों के लोग एकत्र होकर इन सब मुद्दों पर समय की मांग के अनुसार विचार कर,निर्णय करते है तो यह उन संगठनों की सार्थकता है और समाज के आह्वान पर लोग विभिन्न प्रतिगामी रीतिरिवाजों,अन्धविश्वसों,जाती आधारित पूर्वाग्रहों-दुराग्रहों से दूर होते है तो यह उनके सामर्थ्य-प्रसांगिकता के प्रमाण होंगे।**

विभिन्न जातियों की राज्य सरकार के निर्णयों से जुड़ी समस्याएं भी होती है।जाती उत्थान के लिए कुछ मांगे भी राज्य सरकार से सम्बंधित हो सकती है। उदाहरण के लिए लुहार,बढई, खाती, कुम्हार जतियों के पारम्परिक धंधों से जुड़े औजारों के उन्नयन की बात हो सकती है, बैंक ऋणों से सम्बंधित समस्या हो सकती है। इनके संगठन इस प्रकार की मांगें राज्य से कर सकते है।सरकार ही इस सम्बंध में कार्यवाही कर सकती है।

किसान जातियों से जुड़े संगठन कृषि,पशुपालन से जुड़ी समस्याओं के समाधान की मांगें सरकार के समक्ष रख सकती है।उदाहरण के लिए कृषि विविधीकरण के लिए प्रोत्साहन,कृषि उपजों के लिए लाभकारी मूल्य व उस पर क्रय की व्यवस्था,अन्य देशों से सब्सिडाइज्ड उत्पादों के सस्ते आयतों से किसानों की रक्षा, कम पानी की फसलों के लिए फार्म लेवल पर डिमोंस्टरेसन्स,विभिन्न अनुदान योजनाओं के ओर अधिक सरलीकरण,गलत नीतियों व कुछ संगठनों द्वारा की जाने वाली डराने–धमकाने जैसी कार्यवाहियों के चलते उतपन्नआवारा पशुओं की समस्या,इन सब से से निजात–– इत्यादि।

विभिन्न राजकीय सेवाओं में विभिन्न वर्गों को आरक्षण देना वेंद्र और राज्य सरकारों की नीतियां है।इन के अंतर्गत जारी आदेशों और उनके क्रियान्वयन से जुड़ी ग्रीवानसेज समय समय पर सामने आती रहती है।छोटे–बड़े आंदोलन भी होते रहते है।इन समस्याओं को इन संगठनों के माध्यम से सरकारों के सामने रखे जा सकती है।

सम्मेलन के समय संगठनों का दायित्व:–कुछ बड़ी जातियां,जब इस प्रकार के सम्मेलन करती है तो बड़ा जन समूह एक साथ होता है।इसलिए आयोजकों का दायित्व बनता है कि–––शहरियों का सामान्य –यातायात, कानून व्यवस्था दुष्प्रभावित न हो। अत्यावश्यक कार्यों के लिए जाने वालों को परेशनियों का सामना न करना पड़े।इसके लिए समाज के बड़ी संख्या में वोलेंट्रीयस तैयार कर उन्हें इन सब व्यवस्थाओं के लिए ट्रेनिंग देकर तैनात किया जाए।

बड़ी गेदरिंग्स सामने होने पर पोलिटीसियन्स उसका दुरुयोग करने के लालच का संवरण नहीं कर पाते।आयोजकों के लिए यह अत्यंत कठिन दायित्व बन जाता है कि ऐसा न हो पाए।असामाजिक तत्व भी विभिन्न प्रकार से ऐसे अवसरों का दुरुपयोग कर सकते हैं।आयोजकों के दायित्व होता है कि ऐसा न हो पाए।

नवाचार–––हर समाज में विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले अत्यंत समान्नित लोग होते है। इन मंचों का अत्यंत सकारात्मक उपयोग होगा यदि ऐसे सहित्यकारों, कलाकारों, शिक्षकों, संगीतज्ञों, समाज सेवियों,प्रगतिशील कृषकों–कामगारों, अनेक लोगों को रोजगार देने वाले उद्यिमयों–व्यवसायियों––––––इत्यादि का सम्मान इन मंचों से किया जाए।पुछले कुछ समय से इस प्रकार के समाचार भी यदाकदा आते है जिसमें एक रुपया नातीयल में शादियां सम्पन्न हुई है। ऐसे जोड़ों को भी इन संगठनों के मंचों से सम्मानतित किया जाना प्रशंसनीय होगा।इस से जातीय संगठनों की स्वीकार्यता बढ़ेगी।

किसी भी संगठन की सबसे बड़ी ताकत उसकी सदस्यता प्रक्रिया,पदाधिकारीयों के चयन की पारदर्शी कार्य प्रणाली,नियमित बैठकें–विचार विमर्श व उधेयशयों की प्राप्ति के लिए सतत गतिविधियां होती है।ऐसे संगठन शिक्षा,स्वास्थ्य, समाज सुधार,विभिन्न लोगों को विभिन्न प्रकार से प्रोत्साहन देने के क्षेत्रों में ज्यादा व्यापक व लंबे समय तक,समाज की सर्व स्वीकार्यता के साथ समाज हित कार्य कर सकते है।

– महावीर सिंह
(पूर्व आईएएस)

फड़ चित्रकला को विकसित करने में पद्मश्री स्व. श्रीलाल जोशी का अद्वितीय योगदान

राजस्थान में फड़ चित्रकला शैली को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फड़ चित्रकार स्वर्गीय श्रीलाल जोशी ने विकसित किया। फड चित्रकला में स्वर्गीय श्री लाल जोशी का अभूतपूर्व योगदान रहा। उन्हें पद्मश्री, राष्ट्रपति पुरस्कार एवं शिल्प गुरु सम्मान से नवाजा गया। राजमहलों की दीवारों पर आधृत इस कला को रोचक बनाकर कपडे के केनवास पर सुर–ताल–लय में स्वरबद्ध करने का श्रेय स्वर्गीय श्री लाल जोशी को है।

फड चित्रकला को समृद्ध करने में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कल्याण जोशी, गोपाल जोशी, दुर्गालाल जोशी एवं राज्य पुरस्कार प्राप्त मनोज जोशी का अद्वितीय योगदान है। कल्याण जोशी की ग्वाटेमाला सेंट्रल कनाडा में चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित हुई।

डॉ. विनोद जोशी पहले फड चित्रकार हैं, जिन्होंने पाबूजी काव्य पर पीएचडी कर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। डॉ. विनोद जोशी एवं नीमा जोशी के भगवान बुद्ध, जगन्नाथ यात्रा, श्रीनाथजी के 365 स्वरूप, गणेश स्तुति आदि अनेक चित्र मंगलम आर्ट्स में संठाहीत हैं। डॉ. विनोद जोशी का पाबूजी की फड़ पर कैटलॉग दूरदर्शन पर सांस्कृतिक पत्रिका सुरभि में प्रसारित हुआ। रामगोपाल जोशी की एक देवनारायण की फड भारतीय ललित कला में संठाहीत है। सुबोध जोशी के फड चित्र कई पत्र–पत्रिकाओं में छप चुके हैं। मनोज जोशी ने कई नए फड कलाकार तैयार किए हैं।

मेवाडी में कपडे के टुकडे पर चित्रण इबारत को फड कहते है जो सँस्कृति के पट (वस्त्र) का ही अपभ्रंश है। पड़ या फड का तात्पर्य पढ़ने या बाँचने से भी लगाया गया है। सर्वाधिक फडें देवी–देवताओं में पाबूजी राठौड, देवनारायण, दुर्गा, गोगाजी, दशामाता, सूरजनारायण, पथवारी, डाडा बावजी, महादेवजी, रामदेवरा, भँवरा बावजी, शीतला माता आदि मुख्य हैं। ये फडें जीवनधर्मी, आदर्शमय एवं अनुष्ठानिक होते हुए अपनी मूल पीठिका में लोक मंगल की धार्मिक भावना लिए होती हैं। ये देवी– देवता स्वधर्मपालन और जन कल्याण में लगे लोगों की आस्था और विश्वास में अभिवृद्धि करती हैं।

इसके अलावा महिलाओं के पूज्य त्यौहारों की पारम्परिक कथाएँ जैसे– नागपंचमी, करवा चौथ, गणगौर, श्रवण कुमार आदि का भी फडों में चित्रांकन होता है। गीत गोविन्द, महाभारत, रामायण, कुमार सम्भव, पंच कल्याण आदि से लेकर ऐतिहासिक गाथाओं, जैसे– पृथ्वीराज चैहान, हाडी रानी, पद्मिनी, जौहर, महाराणा प्रताप, अमरसिंह राठौड, हल्दी घाटी, संयोगिता हरण, चन्द वरदाई, पृथ्वीराज रासो, गोरा–बादल, मूमल, ढोला मारू आदि विषयक गाथाओं पर भी फड़ों में सुन्दर चित्रांकन किया जा चुका है।

राजस्थान की लोक सँस्कृति में पड या फड़ बाँचने या पढ़ने की विशेष परम्परा थी। सामूहिक फड–वाचन किसी खुली जगह या चौपाल में पूर्ण श्रद्धा व आस्था के साथ होता था। लगभग तीस फुट लम्बी और पाँच फुट चौडी फड बाँसों के सहारे खुली जगह या चौपाल में तान दी जाती थी। फड़ में चित्रित कथा को सुर–ताल तथा लय के साथ गायन के रूप में पढ़ा जाता था। इसके सुरीले गायक को भोपा कहते थे, जो कि गाते समय छडी की सहायता से फड़ पर चित्रित दृश्यों को समझाता था।

प्राचीनकाल में भोपे गाँव–गाँव में जाकर वीरों की शौर्य गाथा, विरूदावली को गीतों में रचकर सुनाते थे। फड़ में उन्हीं विरूदावलियो, कथाओं को चित्रित कर इन्हें दृश्य–श्रव्य बना दिया। भोपे के साथ भोपण तथा उसके अन्य साथी भी होते थे। यदि फड़ रात में बाँची जाती थी तो भोपण हाथ में एक डण्डे पर लटकता एक दीपक लिए रहती थी, जिसके उजाले में फड़ चित्र चमकते थे। इस प्रकार गायी गई घटना तथा चित्र में ऐसा सामंजस्य होता था कि श्रोता पर गइराई तक असर पडता था।

भोपे के अन्य साथी ढोलक, मंजीरा, अलगोजा, थाली, चींपिया, जंतर, रावण हात्था आदि लोक वाद्य बजाते थे। मुख्य गायक भोपा लाल रंग की कोर लगी अंगरखी धोती और साफा बाँधकर अपने उल्लासपूर्ण स्वरों में घटना के अनुरूप उतार–चढ़ाव का क्रम साधे रहता था। इस प्रकार कथा–गाथा को सुर–ताल–लय में बाँधते भोपा–भोपण और श्रद्धालु मंत्रमुग्ध हो फड़ का देखते सुनते थे।

उल्लेखनीय है कि सुप्रसिद्ध लोक नायक पाबूजी का बोध चिन्ह भाला है जबकि देव नारायण का बोध चिन्ह सर्प है। सर्वाधिक लोकप्रिय पाबूजी की फड़ है किन्तु देवनारायण जी की सवारी फड़ सबसे लम्बी होती थी। राजस्थान की फड चित्रकारी पूर्ण श्रद्धा भक्ति व आस्था के साथ व्यावहारिक रूप में उपयोग में ली जाती थी। देवताओं के सो जाने की मान्यता से चातुर्मास में फड–चित्रण नहीं होता था। पुनः देव उठनी, एकादशी से फड चित्रण कार्य आरम्भ होता था।

फड़ चित्रण में एक ओर जहाँ फड शैली की परम्परागत सीमाएँ कलाकार को बाँधकर रखती थीं वहीं दूसरी ओर रंगों के प्रयोग की भी अपनी सीमाएँ थीं। प्रायः लाल, पीला, हरा, काला, आसमानी, भूरा, एवं त्वचा का रंग भी नारंगी जैसा प्रयुक्त होता है। शौर्य गाथा चित्रण में लाल रंग प्रधान होता है। प्राचीनकाल में प्राकृतिक या पत्थर के रंगों का प्रयोग होता था जो वनस्पतियों से प्राप्त होते थे।

विभिन्न प्रकार के रंग विशेष पत्थरों को पीसकर उनमें गोंद या सरेस मिलाकर तैयार होते थे। जंगार से हरा, हरताल से पीला, हींगलू से लाल और हरमच से भूरा रंग बनाते थे। पत्थरों को पीस कर उनमें गोंद मिले रंग जहाँ चित्रों को विशेष रंग देते थे। गोंद या सरेस मिलने से रंगों का पक्कापन बढ़ता था। यह बरसों तक फीके नहीं पडते तथा इतने चककीले होते हुए भी आँखों को चुभते नहीं थे।

फड चित्र शैली के चित्रों में आकृति थोडी मोटी और गोल, आँखें बडी–बडी तथा नाक अन्य शैलियों की अपेक्षा छोटी व मोटी होती है। राजस्थान फड शैली के जन्मदाता श्रीलाल जोशी लोक कला क्षेत्र के एक मात्र ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने वंशानुगत फड चित्रांकन में रंग संयोजन का आधार पारम्परिक रखा किन्तु फोक आर्ट और फाईन–आर्ट को आत्मसात किया।

– पन्नालाल मेघवाल
वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार।

आज निकलेगा वरघोड़ा, रात को होगी भक्ति संध्या

- **17 फरवरी को सुबह 9 बजे होगी मुमुक्षु निशा कोठारी की दीक्षा के लिए अपने निवास स्थान से विदाई**

नागौर (निस)। शहर के कांच के मंदिर के ठीक सामने रहने वाले व्यवसायी कमलकिशोर–ललिता कोठारी की इकलौती पुत्री निशा कोठारी 22 फरवरी को बिजयनगर में दीक्षा लेंगी। मुमुक्षु सुश्री निशा कोठारी को हुक्मगच्छाधिपति, नानेश पट्टधर, जिनशासन गौरव आचार्य प्रवर 11008 श्री विजयराज महाराज दीक्षा प्रदान करेंगे। ये दीक्षा समारोह उपाध्याय प्रवर, प्रज्ञारत्न जितेश मुनि महाराज व परम विदुषी शासन प्रभाविका, तर्क मनीषी महाश्रमणी रत्ना पूज्या श्री सूर्यकांता जी महाराज की पावन निश्रा में होगा। मुमुक्षु निशा के दीक्षा को लेकर सात दिवसीय विभिन्न धार्मिक आयोजन शुरू हो गए हैं।

जानकारी के अनुसार 13 फरवरी को मुमुक्षु निशा के निवास पर शाम को नवकार महामंत्र के जाप हुए। तदोपरांत 14 फरवरी को कुशल भवन में सुबह सवा 11 बजे से दोपहर तक कुमकुम व हल्दी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। उन्होंने बताया कि बुधवार को कुशन भवन में दोपहर डेढ़ बजे से सांझीगीत कार्यक्रम हुवा। आज सुबह 8 बजे मुमुक्ष निशा कोठारी के निवास स्थान से वर्षीदान वरघोडा निकाला जाएगा। उन्होंने बताया कि 16 फरवरी को सुबह साढ़े 11 बजे से स्वामी वात्सल्य यानि न्यात का कार्यक्रम बाजरवाड़ा स्थित बेताला निवास पर होगा। इसी रात 8 बजे से देर रात तक भक्तिक के रंग दीक्षार्थी के संग नामक भक्ति संध्या होगी जिसमें सुप्रसिद्ध गायक श्रेयांस सिंघवी भजनों की प्रस्तुति देंगे। ये कार्यक्रम कुशल भवन में देर रात तक लेगा। लोकेश कोठारी ने बताया कि 17 फरवरी को सुबह बजे मुमुक्ष निशा की बिजयनगर के लिए 9 बजे विदाई होगी। जिसमें सकल जैन समाज शामिल होगा। उन्होंने बताया कि मुमुक्षु निशा के बिजयनगर में 18 से 22 फरवरी तक अनेक कार्यक्रम होंगे। उन्हें 22 फरवरी को प्रात साढ़े 11 बजे आचार्य प्रवर विजयराज जी महाराज दीक्षा प्रदान करेंगे।

एलएलबी तक शिक्षित होने के बाद अपनाया वैराग्य मार्ग – शहर के कांच के मंदिर के ठीक सामने रहने वाले कमल किशोर कोठारी की सुपुत्री निशा कोठारी ने बीकॉम करने के बाद एलएलबी की डिग्री हासिल की। वे न्यायिक अधिकारी बनना चाहती थी और इसके लिए उन्होंने जयपुर में रहकर आरजेएस परीक्षा की तैयारी के लिए कोचिंग भी ली मगर अचानक वैराग्य भाव पैदा हुआ और पिछले एक साल से वे वैराग्य काल में ही जीवन यापन कर रही है। वे अब तक 200 किलोमीटर की विहार यात्रा भी कर चुकी है।

चूरू में टूटी सड़कों व गन्दे पानी से परेशानी बढ़ी

ए.सी. कार्यालय के आगे गंदगी के कारण दुर्गन्ध फैली

- **अपने मुख्य दरवाजे के आगे सड़क पर पड़े गहरे गड्ढे भरने में भी बेबस चूरू का सार्वजनिक निर्माण विभाग**
- **चूरू में नगर परिषद से सार्वजनिक निर्माण विभाग भी परेशान हुआ!**

चूरू, (का. सं.)। चूरू में सार्वजनिक निर्माण विभाग एसी कार्याल य के मुख्य दरवाजे के सामने आगे पड़े गहरे गड्ढे और टूटी हुई सड़क पर एकत्रित गंदे पानी के कारण आमजन के साथ विभिन्न विभागों के कर्मचारी व अधिकारी परेशान हैं। इतना ही नहीं इस कार्याल य की दीवार के पास गंदगी फैल ी हुई है, दुर्गंध के कारण सभी परेशान रहते हैं।

हालांकि कोई भी जनप्रतिनिधि, कर्मचारी या अधिकारी इस समस्या का समाधान करवाने के लिए आगे नहीं आ रहा है। अपने मुख्य दरवाजे के आगे सड़क पर पड़े गहरे गड्ढे भरने में भी बेबस है चूरू का सार्वजनिक निर्माण विभाग। इस संबंध में रिपोर्टर द्वारा सार्वजनिक निर्माण विभाग एसी कार्याल य के तकनीकी कक्ष में बैठे कर्मी से जब पूछा गया कि क्या आपको मुख्य दरवाजे के आगे गड्ढा दिखाई नहीं देता है, इस पर उन्होंने कहा कि दिखाई तो देता है ले किन मजबूरी है। यह सड़क नगर परिषद की है।

नगर परिषद कोई ध्यान ही नहीं देती है। सफाई करने के लि ए भी बार–बार टेल ीफोन करके बुल ाना पड़ता है। यहां सफाई करने कोई आता ही नहीं है। इस कारण यहां गंदगी और दुर्गंध फैल ी हुई है। इस संबंध में सार्वजनिक निर्माण विभाग चूरू के एसी शिशुपाल सिंह ने कहा कि सड़क नगरपरिषद द्वारा मेंटेन की जा रही है। स्वाभाविक तौर से सड़क की मरम्मत का कार्य भी नगरपरिषद द्वारा ही किया जाना है।

सभापति पायल सैनी को भी समस्या के बारे में अवगत करवाया गया है। उल्लेखनीय है कि सार्वजनिक निर्माण विभाग एसी कार्यालय के आगे सड़क से आयकर विभाग, भ्रष्टाचार निरोधक विभाग आदि की ओर आने–जाने वाले लोगों एवं कर्मियों को बड़ी दिक्कत होती है। यह नगरपरिषद की सड़क होना लोगों के लिए दुर्भाग्य बना हुआ है।

एएनसी पंजीकरण की डबल एंट्री होने पर आशा को हो रहा डबल भुगतान

- **कलेक्टर ने बिठाई जांच, होगी कार्यवाही**
- **पहली बार जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक लूणकरणसर में आयोजित**

बीकानेर। जिला स्वास्थ्य समिति की गत बैठक में जिला कलेक्टर भगवती प्रसाद कलाल द्वारा प्रदत्त निर्देशों की पालना में जिला स्तरीय अधिकारियों द्वारा विभिन्न चिकित्सा संस्थानों का निरीक्षण किया गया।

निरीक्षण में निकल कर आया कि कई संस्थानों पर कुछ गर्भवतियों का दो बार एएनसी पंजीकरण हो गया और उसके पेटे आशा सहयोगिनी को दो बार इंसेंटिव का भुगतान भी हो गया। एक ही गर्भवती की दो एएनसी पंजीकरण होने के कारण उसका डिलीवरी रिकॉर्ड पीसीटीएस सॉफ्टवेयर में दर्ज नहीं हो पाया और वह मिसिंग डिलीवरी के रूप में आंकड़ों में परिलक्षित हो रही थी। उक्त जानकारी बुधवार को लूणकरणसर के आईटी सेवा केंद्र सभागार में आयोजित जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में दी गई। जिला कलेक्टर ने मामले को गंभीरता से लेते हुए तत्काल जिला स्तरीय कमेटी बनाकर मामले की जांच के आदेश दे डाले। उन्होंने स्पष्ट किया कि जानबूझकर राजकोष को हानि पहुंचाते हुए किसी प्रकार की अनियमितता पाई गई तो रिकवरी ही नहीं, संबंधित पर सख्त दंडात्मक कार्यवाही अमल में लाई जाएगी ।

उल्लेखनीय है कि गत डीएचएस में लिए गए निणन्य अनुसार सबसे कम उपलब्धि वाले खंड के तौर पर लूणकरणसर में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक आयोजित की गई तथा उस खंड के अधिकांश चिकित्सा संस्थानों का निरीक्षण जिला स्तरीय अधिकारियों द्वारा किया गया। जिला कलेक्टर ने निर्देश दिए कि 9 ग्राम से कम हिमोग्लोबिन वाली प्रत्येक गर्भवती महिला की ट्रैकिंग चिकित्सा अधिकारी प्रभारी व्यक्तिगत रूप से करेंगे और ब्लॉक सीएमओ द्वारा उसकी प्रभावी मॉनिटरिंग की जाएगी। उन्होंने गर्भावस्था की 12 से 25 सप्ताह के दौरान होने वाली समस्त सोनोग्राफी की भी ट्रेकिंग के निर्देश दोहराए ताकि जन्म पर लिंगानुपात में प्रगति बनी रहे। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मोहम्मद अबरार पवार ने वृंदावन एंक्लेव में प्रस्तावित जनता क्लीनिक तथा अन्य वित्तीय प्रस्ताव सदन में रखें।

मेजबान ब्लॉक सीएमओ लूणकरणसर डॉ विभय तंवर व ब्लॉक सीएमओ बीकानेर डॉ सुनील हर्ष द्वारा अपने–अपने खंड की विस्तृत प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। जिला कलेक्टर द्वारा विद्यालयों में आईएफए टेबलेट की आपूर्ति, एनसीडी सर्वे के लिए आशाओं के भुगतान, आईएचआईपी पोर्टल पर शत प्रतिशत इंद्राज, निजी चिकित्सालय में हो रही डिलीवरी की पीसीटीएस सॉफ्टवेयर में इंद्राज व टीबी सर्विलांस के लिए अधिकाधिक स्पुटम जांच करवाने संबंधी निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री निशुल्क दवा योजना में जिला लगातार 11 माह पहले स्थान पर रहा। इस संदर्भ में जिले में पहले तीन स्थानों पर रहने पर क्रमशः पीएचसी राजासर भाटियान, रानेर दामोलाई व सीएचसी हदां को रनिंग शील्ड देकर सम्मानित किया गया। बैठक में उपखण्ड अधिकारी लूणकरणसर संजीव कुमार वर्मा, आरसीएचओ डॉ राजेश कुमार गुप्ता, डिप्टी सीएमएचओ परिवार कल्याण डॉ योगेंद्र तनेजा, डिप्टी सीएमएचओ स्वास्थ्य डॉ लोकेश गुप्ता, जिला टीबी अधिकारी डॉ सी एस मोदी, डॉ नवल किशोर गुप्ता, जिला अस्पताल अधीक्षक डॉ प्रवीण चतुर्वेदी सहित समस्त जिला स्तरीय कार्यक्रम अधिकारी, ब्लॉक सीएमओ, बीपीएम, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के प्रभारी अधिकारी मौजूद रहे।

राशिफल

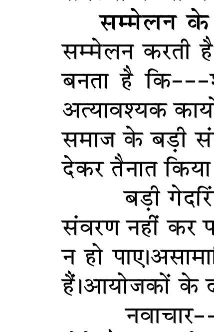

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 16 फरवरी 2023

फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, गुरूवार, विक्रम सम्वत 2079, मूल नक्षत्र रात्रि 10.53 तक वठा योग रात्रि 3.35 तक बवकरण सायं 4.14 तक चन्द्रमा धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति : सूर्य–कुम्भ, चन्द्रमा–धनु, मंगल–वृष, बुध–मकर, गुरू–मीन, शुक्र–मीन, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतू–तुला राशि में संचार करेगा।

आज विजया एकादशी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघडिया : शुभ सूर्योदय से 8.30 तक, चर 4.17 से 12.41 तक, लाभ–अमृत 12.41 से 3.28 तक शुभ 4.51 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल – 1.30 से 3.00 तक सूर्योदय 7.07 सूर्यास्त 6.15 पर

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलंब हो सकता है। मित्रो–रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक सम्पर्क बनेगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। परिवार में शुभ मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

कर्क
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यक्तिगत समस्या से राहत मिलेगी। दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बडेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है।

कन्या
घर–परिवार में अतिथियों का आगमन हो सकता है। परिवार में धार्मिक सामाजिक समारोह संपन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्य के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।

मकर
अर्नगल कार्यों में समय खराब होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भाग–दौड़ रहेगी। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

कुंभ
आर्थिक वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।